

حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۗ وَأَمْرٌ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾ وَأَنْ

हरमत वाला किया है¹⁶⁰ और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुआ है कि फ़रमां बरदारों में हों और यह कि

أَتْلُوا الْقُرْآنَ ۚ فَمِنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّ

कुरआन की तिलावत करूँ¹⁶¹ तो जिस ने राह पाई उस ने अपने भले को राह पाई¹⁶² और जो बहके¹⁶³

فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ أَخْبَأْتُ لَكُمْ إِلَهُكُمْ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سِيرِكُمْ آيَاتِهِ

तो फ़रमा दो कि मैं तो येही डर सुनाने वाला हूँ¹⁶⁴ और फ़रमाओ कि सब खूबियां **اللَّهُ** के लिये हैं अन्क़रीब वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा

فَتَعْرِفُونَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

तो उन्हें पहचान लो¹⁶⁵ और ऐ महबूब तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे आ'माल से

﴿٩٣﴾ ﴿٩٢﴾ ﴿٩١﴾ ﴿٩٠﴾ ﴿٨٩﴾ ﴿٨٨﴾ ﴿٨٧﴾ ﴿٨٦﴾ ﴿٨٥﴾ ﴿٨٤﴾ ﴿٨٣﴾ ﴿٨٢﴾ ﴿٨١﴾ ﴿٨٠﴾ ﴿٧٩﴾ ﴿٧٨﴾ ﴿٧٧﴾ ﴿٧٦﴾ ﴿٧٥﴾ ﴿٧٤﴾ ﴿٧٣﴾ ﴿٧٢﴾ ﴿٧١﴾ ﴿٧٠﴾ ﴿٦٩﴾ ﴿٦٨﴾ ﴿٦٧﴾ ﴿٦٦﴾ ﴿٦٥﴾ ﴿٦٤﴾ ﴿٦٣﴾ ﴿٦٢﴾ ﴿٦١﴾ ﴿٦٠﴾ ﴿٥٩﴾ ﴿٥٨﴾ ﴿٥٧﴾ ﴿٥٦﴾ ﴿٥٥﴾ ﴿٥٤﴾ ﴿٥٣﴾ ﴿٥٢﴾ ﴿٥١﴾ ﴿٥٠﴾ ﴿٤٩﴾ ﴿٤٨﴾ ﴿٤٧﴾ ﴿٤٦﴾ ﴿٤٥﴾ ﴿٤٤﴾ ﴿٤٣﴾ ﴿٤٢﴾ ﴿٤١﴾ ﴿٤٠﴾ ﴿٣٩﴾ ﴿٣٨﴾ ﴿٣٧﴾ ﴿٣٦﴾ ﴿٣٥﴾ ﴿٣٤﴾ ﴿٣٣﴾ ﴿٣٢﴾ ﴿٣١﴾ ﴿٣٠﴾ ﴿٢٩﴾ ﴿٢٨﴾ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٦﴾ ﴿٢٥﴾ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٣﴾ ﴿٢٢﴾ ﴿٢١﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿١٩﴾ ﴿١٨﴾ ﴿١٧﴾ ﴿١٦﴾ ﴿١٥﴾ ﴿١٤﴾ ﴿١٣﴾ ﴿١٢﴾ ﴿١١﴾ ﴿١٠﴾ ﴿٩﴾ ﴿٨﴾ ﴿٧﴾ ﴿٦﴾ ﴿٥﴾ ﴿٤﴾ ﴿٣﴾ ﴿٢﴾ ﴿١﴾

सूरए कसस मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और नव रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

طَسْمًا ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ نَتْلُو عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَىٰ

येह आयतें हैं रोशन किताब की² हम तुम पर पढ़ें मूसा

وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَ

और फ़िरऔन की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में ग़लबा पाया था³ और

جَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضَعِفُ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَ

उस (ज़मीन) के लोगों को अपना ताबेअ बना लिया उन में एक गुरौह को⁴ कमज़ोर देखता उन के बेटों को ज़ब्द करता और

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का वतन और वहुय का जाए नुज़ूल है। 160 : कि वहां न किसी इन्सान का खून बहाया जाए न कोई शिकार मारा

जाए न वहां की घांस काटी जाए। 161 : मख़लूके खुदा को ईमान की दा'वत देने के लिये। 162 : उस का नपअ व सवाब वोह पाएगा

163 : और रसूले खुदा की इताअत न करे और ईमान न लाए 164 : मेरे ज़िम्मे पहुंचा देना था वोह मैं ने अन्नाम दिया (هَذِهِ آيَةٌ نَسَخْنَا آيَةَ الْفِتَالِ)

165 : इन निशानियों से मुराद शक्के कमर वगैरा मो'जिजात हैं और वोह उक़ूबतें जो दुन्या में आई जैसे कि बद्र में कुप्फ़ार का कत्ल होना,

कैद होना, मलाएका का उठें मारना। 1 : सूरए कसस मक्किय्या है सिवाए चार आयतों के जो "الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ" से शुरूअ हो कर

"الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ" पर ख़त्म होती हैं, और इस सूत में एक आयत "إِنَّ الَّذِي فَرَضَ" ऐसी है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तथ्यबा के

दरमियान नाज़िल हुई। इस सूत में नव 9 रुकूअ अठासी 88 आयतें और चार सो इक्तालीस 441 कलिमे और पांच हज़ार आठ सो 5800

हर्फ़ हैं। 2 : जो हक़ को बातिल से मुमताज़ करती है। 3 : या'नी सर ज़मीने मिस्र में उस का तसल्लुत था और वोह जुल्मो तकब्बुर में इन्तिहा

को पहुंच गया था, हत्ता कि उस ने अपनी अब्दिद्यत और बन्दा होना भी भुला दिया था। 4 : या'नी बनी इसराईल को।

الْمَزَلُ الْخَامِسُ ﴿٥﴾

يَسْتَحْيِ نِسَاءَهُمْ ۖ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۚ ۝٣ وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى

उन की औरतों को जिन्दा रखता⁵ बेशक वोह फ़सादी था और हम चाहते थे कि उन कमजोरों

الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا فِي الْأَرْضِ وَنَجَعَلَهُمْ أَيْمَةً وَنَجَعَلَهُمُ

पर एहसान फ़रमाएं और उन को पेशवा बनाएं⁶ और उन के मुल्क व माल का उन्हीं

الْوَارِثِينَ ۝٥ وَنُكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَ

को वारिस बनाएं⁷ और उन्हें⁸ ज़मीन में कब्ज़ा दें और फिरऔन और हामान और उन के लश्करो

جُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْدُرُونَ ۝٦ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ

को वोही दिखा दें जिस का उन्हें इन की तरफ़ से ख़तरा है⁹ और हम ने मूसा की मां को इल्हाम फ़रमाया¹⁰ कि

أَرْضِعِيهِ ۚ فَإِذَا خَفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۚ

उसे दूध पिला¹¹ फिर जब तुझे उस से अन्देशा हो¹² तो उसे दरिया में डाल दे और न डर¹³ और न ग़म कर¹⁴

إِنَّا رَأَدُّوهُ إِلَيْكَ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝٧ فَالْتَقَطَهُ آلُ

बेशक हम उसे तेरी तरफ़ फेर लाएंगे और उसे रसूल बनाएंगे¹⁵ तो उसे उठा लिया फिरऔन के

فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۚ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا

घर वालों ने¹⁶ कि वोह उन का दुश्मन और उन पर ग़म हो¹⁷ बेशक फिरऔन और हामान¹⁸ और उन के लश्कर

5 : या'नी लड़कियों को खिदमत गारी के लिये जिन्दा छोड़ देता और बेटों को ज़ब्द करने का सबब येह था कि काहिनों ने उस से कह दिया था कि बनी इसराईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरे मुल्क के ज़वाल का बाइस होगा, इस लिये वोह ऐसा करता था और येह उस की निहायत हमाक़त थी क्यूं कि वोह अगर अपने ख़याल में काहिनों को सच्चा समझता था तो येह बात होनी ही थी, लड़कों के क़त्ल कर देने से क्या नतीजा था और अगर सच्चा नहीं जानता था तो ऐसी लग़व बात का क्या लिहाज़ था और क़त्ल करना क्या मा'ना रखता था । 6 : कि वोह लोगों को नेकी की राह बताएं और लोग नेकी में उन की इक़तदा करें 7 : या'नी फिरऔन और उस की क़ौम के अम्लाक व अम्वाल उन ज़ईफ़ बनी इसराईल को दे दें 8 : मिस्र और शाम की 9 : कि बनी इसराईल के एक फ़रजन्द के हाथ से उन के मुल्क का ज़वाल और उन का हलाक हो । 10 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम यूहानिज़ है, आप लावा बिन या'कूब की नस्ल से हैं, **اَللّٰهُ** तअलाला ने उन को ख़्वाब के या फिरिश्ते के ज़रीए या उन के दिल में डाल कर इल्हाम फ़रमाया 11 : चुनान्चे वोह चन्द रोज़ आप को दूध पिलाती रहीं, इस अर्से में न आप रोते थे न उन की गोद में कोई हरकत करते थे, न आप की हमशीरा के सिवा और किसी को आप की विलादत की इत्तिलाअ़ थी । 12 : कि हमसाया वाकिफ़ हो गए हैं वोह ग़म्माजी और चुगुल खोरी करेंगे और फिरऔन इस फ़रजन्दे अरजुमन्द के क़त्ल के दरपै हो जाएगा 13 : या'नी नीले मिस्र में बे ख़ौफ़ो ख़तर डाल दे और इस के ग़क़ व हलाक का अन्देशा न कर । 14 : उस की जुदाई का 15 : तो उन्हीं ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तीन माह दूध पिलाया और जब आप को फिरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुवा तो एक सन्दूक में रख कर (जो ख़ास तौर पर इस मक़सद के लिये बनाया गया था) शब के वक़्त दरियाए नील में बहा दिया 16 : उस शब की सुब्द को और उस सन्दूक को फिरऔन के सामने रखा और वोह खोला गया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बरआमद हुए जो अपने अंगूठे से दूध चूसते थे । 17 : आख़िर कर 18 : जो उस का वज़ीर था ।

كَانُوا خَاطِئِينَ ۝ وَقَالَتْ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قَرَّتْ عَيْنِي لِئِذَا عَلَّمْتُ لِي وَلَكَ ۝ لَا

ख़ताकार थे¹⁹ और फिरऔन की बीबी ने कहा²⁰ यह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठन्डक है इसे

تَقْتُلُوهُ ۝ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۝ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَ

क़त्ल न करो शायद यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें²¹ और वोह बे ख़बर थे²² और

أَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَرِعًا ۚ إِن كَادَتْ لِتَبْدِي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَبَّنَا

सुह्र को मूसा की मां का दिल बे सब्र हो गया²³ ज़रूर करीब था कि वोह उस का हाल खोल देती²⁴ अगर हम न ढास

عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۚ فَبَصَّرَتْ

बंधाते उस के दिल पर कि उसे हमारे वा'दे पर यक़ीन रहे²⁵ और (उस की मां ने) उस की बहन से कहा²⁶ उस के पीछे चली जा तो वोह उसे

بِهِ عَنْ جُنُبٍ ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

दूर से देखती रही और उन को ख़बर न थी²⁷ और हम ने पहले ही सब दाइयां उस पर ह़राम कर दी थीं²⁸

فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ۝

तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूँ ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वोह इस के ख़ैर ख़्वाह हैं²⁹

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَتَعَلَّمَ أَنْ وَعَدَ اللَّهُ

तो हम ने उसे उस की मां की तरफ़ फेरा कि मां की आंख ठन्डी हो और गुम न खाए और जान ले कि **اللَّهُ** का वा'दा

19 : या'नी ना फ़रमान, तो **اللَّهُ** तआला ने उन्हें यह सज़ा दी कि उन के हलाक करने वाले दुश्मन की उन्हीं से परवरिश कराई। 20 : जब कि फिरऔन ने अपनी क़ौम के लोगों के वर्गालाने से मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के क़त्ल का इरादा किया। 21 : क्यूं कि यह इसी क़ाबिल है। फिरऔन की बीबी आसिया बहुत नेक बीबी थीं, अम्बिया की नस्ल से थीं, ग़रीबों और मिस्कीनों पर रहुमो करम करती थीं। उन्हीं ने फिरऔन से कहा कि यह बच्चा साल भर से ज़ियादा उम्र का मा'लूम होता है और तू ने इस साल के अन्दर पैदा होने वाले बच्चों के क़त्ल का हुक्म दिया है, इलावा बर्री मा'लूम नहीं यह बच्चा दरिया में किस सर ज़मीन से आया, तुझे जिस बच्चे का अन्देशा है वोह इसी मुल्क के बनी इसराईल से बताया गया है। आसिया की यह बात उन लोगों ने मान ली 22 : उस से जो अन्जाम होने वाला था। 23 : जब उन्हीं ने सुना कि उन के फ़रज़न्द फिरऔन के हाथ में पहुंच गए। 24 : और जोशे महब्वते मादरी में "وَالْبِنَاءُ وَالْبِنَاءُ" (हाए बेटे हाए बेटे) पुकार उठती 25 : जो वा'दा हम कर चुके हैं कि तेरे इस फ़रज़न्द को तेरी तरफ़ फेर लाएंगे। 26 : जिन का नाम मरयम था कि हाल मा'लूम करने के लिये 27 : कि यह इस बच्चे की बहन है और इस की निगरानी करती है। 28 : चुनान्चे जिस क़दर दाइयां हाज़िर की गई उन में से किसी की छती आप ने मुंह में न ली। इस से उन लोगों को बहुत फ़िक्र हुई कि कहीं कोई ऐसी दाई मुयस्सर आए जिस का दूध आप पी लें। दाइयों के साथ आप की हमशीरा भी यह हाल देखने चली गई थीं। अब उन्हीं ने मौक़अ पाया 29 : चुनान्चे वोह उन की ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाई। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** फिरऔन की गोद में थे और दूध के लिये रोते थे, फिरऔन आप को शफ़क़त के साथ बहलाता था। जब आप की वालिदा आई और आप ने उन की ख़ुशबू पाई तो आप को क़रार आया और आप ने उन का दूध मुंह में लिया। फिरऔन ने कहा तू इस बच्चे की कौन है कि इस ने तेरे सिवा किसी के दूध को मुंह भी न लगाया? उन्हीं ने कहा मैं एक औरत हूँ पाक साफ़ रहती हूँ, मेरा दूध खुश गवार है जिस्म ख़ुशबूदार है इस लिये जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है, वोह और औरतों का दूध नहीं लेते हैं, मेरा दूध पी लेते हैं। फिरऔन ने बच्चा उन्हें दिया और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़रर कर के फ़रज़न्द को अपने घर ले जाने की इज़ाज़त दी चुनान्चे आप अपने मकान पर ले आई और **اللَّهُ**

ع ٢٠

حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾ وَلَمَّا بَدَغَ أَسَدُهُ وَاسْتَوَىٰ

सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते³⁰ और जब अपनी जवानी को पहुंचा और पूरे जोर पर आया³¹

اتَّبِعَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجَزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ

हम ने उसे हुक्म और इल्म अता फरमाया³² और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को और उस शहर में

الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ

दाखिल हुवा³³ जिस वक़्त शहर वाले दोपहर के ख़ाब में बे ख़बर थे³⁴ तो उस में दो मर्द

يَقْتَتِلَنِ هَذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَعَاثَ الَّذِي

लड़ते पाए एक मूसा के गुरौह से था³⁵ और दूसरा उस के दुश्मनों से³⁶ तो वोह जो उस के गुरौह से था³⁷ उस ने मूसा से मदद

مِّنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ

मांगी उस पर जो उस के दुश्मनों से था तो मूसा ने उस के घूसा मारा³⁸ तो उस का काम तमाम कर दिया³⁹ कहा

هَذَا مِنْ عِبْلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي

येह काम शैतान की तरफ़ से हुवा⁴⁰ बेशक वोह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने

ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاعْفُرْ لِي فَعَفَرَهُ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾ قَالَ

अपनी जान पर ज़ियादती की⁴¹ तो मुझे बख़्शा दे तो रब ने उसे बख़्शा दिया बेशक वोही बख़्शाने वाला मेहरबान है अर्ज़ की

तआला का वा'दा पूरा हुवा, उस वक़्त उन्हें इत्मीनाने का मिल हो गया कि येह फ़रज़न्दे अरजुमन्द ज़रूर नबी होंगे। **اللَّهُ** तआला इस वा'दे का ज़िक्र फ़रमाता है। 30 : और शक में रहते हैं। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** अपनी वालिदा के पास दूध पीने के ज़माने तक रहे और इस ज़माने में फ़िरऔन उन्हें एक अशरफ़ी रोज़ देता रहा, दूध छूटने के बाद आप हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को फ़िरऔन के पास ले आई और आप वहां परवरिश पाते रहे। 31 : उम्र शरीफ़ तीस साल से ज़ियादा हो गई। 32 : या'नी मसालेहे दीन व दुन्या का इल्म। 33 : वोह शहर या तो "मन्फ़" था जो हुदूदे मिस्र में है, अस्ल इस की माफ़ह है ज़बान किब्ती में इस लफ़्ज़ के मा'ना हैं तीस³⁰। येह पहला शहर है जो तूफ़ाने हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** के बाद आबाद हुवा, इस सर ज़मीन में मिस्र बिन हाम ने इक़ामत की, येह इक़ामत करने वाले कुल तीस³⁰ थे, इस लिये इस का नाम माफ़ह हुवा, फिर इस की अरबी मन्फ़ हुई। या वोह शहर "हाबीन" था जो मिस्र से दो फ़रसंग के फ़ासिले पर था। एक कौल येह भी है कि वोह शहर "ऐने शम्स" था। (मज़ल) 34 : और हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के पोशीदा तौर पर दाख़िल होने का सबब येह था कि जब हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** जवान हुए तो आप ने हक़ का बयान और फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की गुमराही का रद शुरू किया। बनी इसराईल के लोग आप की बात सुनते और आप का इत्तिबाअ करते, आप फ़िरऔनियों के दीन की मुख़ालफ़त फ़रमाते। शुदा शुदा (रफ़ता रफ़ता) इस का चरचा हुवा और फ़िरऔनी जुस्तजू में हुए, इस लिये आप जिस बस्ती में दाख़िल होते ऐसे वक़्त दाख़िल होते जब वहां के लोग ग़फ़लत में हों। हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ** से मरबी है कि वोह दिन ईद का था, लोग अपने लहवो लअब में मशगूल थे। (मज़ल) 35 : बनी इसराईल में से 36 : या'नी किब्ती कौमे फ़िरऔन से, येह इसराईली पर ज़ब्र कर रहा था ताकि इस पर लकड़ियों का अम्बार लाद कर फ़िरऔन के मत्वख़ में ले जाए 37 : या'नी हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के 38 : पहले आप ने किब्ती से कहा कि इसराईली पर जुल्म न कर इस को छोड़ दे लेकिन वोह बाज़ न आया और बद ज़बानी करने लगा तो हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उस को इस जुल्म से रोकने के लिये घूसा मारा 39 : या'नी वोह मर गया और आप ने उस को रेत में दफ़न कर दिया, आप का इरादा क़त्ल करने का न था। 40 : या'नी उस किब्ती का इसराईली पर जुल्म करना जो उस की हलाकत का बाइस हुवा। (ग़ान) 41 : येह कलाम हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** का ब तरीके तवाजुअ है क्यूं कि आप से कोई मा'सियत

رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ﴿١٤﴾ فَأَصْبَحَ فِي

ऐ मेरे रब जैसा तू ने मुझ पर एहसान किया तो अब⁴² हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न होउंगा तो सुबह की

الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ ط

उस शहर में डरते हुए इस इन्तिज़ार में कि क्या होता है⁴³ जभी देखा कि वोह जिस ने कल इन से मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है⁴⁴

قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَعَوِيُّ مَبِينٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ

मूसा ने उस से फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है⁴⁵ तो जब मूसा ने चाहा कि उस पर गिरफ्त करे

بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهَا قَالَ يُؤَسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ

जो उन दोनों का दुश्मन है⁴⁶ वोह बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुम ने कल

نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۚ إِنَّ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا

एक शख्स को क़त्ल कर दिया तुम तो येही चाहते हो कि ज़मीन में सख्त गीर बनो और

تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾ وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ

इस्लाह करना नहीं चाहते⁴⁷ और शहर के परले कनारे से एक शख्स⁴⁸

يَسْعَىٰ ۚ قَالَ يُؤَسَىٰ إِنَّ الْمَلَائِيَةَ يُتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي

दौड़ता आया कहा ऐ मूसा ! बेशक⁴⁹ दरबार वाले आप के क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं तो निकल जाइये⁵⁰ मैं

सरज़द नहीं हुई, और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह नहीं होते। किब्ती का मारना आप का दफ़् जुल्म और इमदादे मज़लूम थी, येह किसी मिल्लत में भी गुनाह नहीं, फिर भी अपनी तरफ़ तक्सीर की निस्वत करना और इस्तिफ़ार चाहना येह मुकर्रबीन (अल्लाह वालों) का दस्तूर ही है। बा'जू मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि इस में ताख़ीर औला थी इस लिये हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तर्क औला को ज़ियादती फ़रमाया और इस पर हक़ तआला से मफ़िरत तलब की। 42 : येह करम भी कर कि मुझे फ़िरऔन की सोहबत और इस के यहां रहने से भी बचा कि इस जुमरे में शुमार किया जाना येह भी एक तरह का मददगार होना है। 43 : कि खुदा जाने उस किब्ती के मारे जाने का क्या नतीजा निकले और उस की क़ौम के लोग क्या करें। 44 : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फ़िरऔन की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔन को इत्तिलाअ दी कि किसी बनी इसराईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है। इस पर फ़िरऔन ने कहा कि कातिल और गवाहों को तलाश करो। फ़िरऔनी ग़शत करते फिरते थे और उन्हें कोई सुवत नहीं मिलता था, दूसरे रोज़ जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फिर ऐसा इत्तिफ़ाक पेश आया कि वोही बनी इसराईल जिस ने एक रोज़ पहले इन से मदद चाही थी आज फिर एक फ़िरऔनी से लड़ रहा है और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को देख कर इन से फ़रियाद करने लगा तब हज़रते 45 : मुराद येह थी कि रोज़ लोगों से लड़ता है, अपने आप को भी मुसीबत व परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी, क्यूं ऐसे मौक़ों से नहीं बचता और क्यूं एहतियात नहीं करता। फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को रहम आया और आप ने चाहा कि इस को फ़िरऔनी के पन्जए जुल्म से रिहाई दिलाएं। 46 : या'नी फ़िरऔनी पर। तो इसराईली ग़लती से येह समझा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मुझ से ख़फ़ा हैं मुझे पकड़ना चाहते हैं येह समझ कर 47 : फ़िरऔनी ने येह बात सुनी और जा कर फ़िरऔन को इत्तिलाअ दी कि कल के फ़िरऔनी मक्तूल के कातिल हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं। फ़िरऔन ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल का हुक्म दिया और लोग हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को ढूंडने निकले 48 : जिस को मोमिने आले फ़िरऔन कहते हैं, येह ख़बर सुन कर क़रीब की राह से 49 : फ़िरऔन के 50 : शहर से।

لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ٢٠ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ٥١ قَالَ رَبِّ

आप का खैर ख़्वाह हूँ⁵¹ तो उस शहर से निकला डरता हुआ इस इन्तिज़ार में कि अब क्या होता है अर्ज़ की ऐ मेरे रब

نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٢١ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ

मुझे सितम गारों से बचा ले⁵² और जब मद्यन की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ⁵³ कहा

عَسَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ٢٢ وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ

करीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए⁵⁴ और जब मद्यन के पानी पर आया⁵⁵

وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ٥٦ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ

वहाँ लोगों के एक गुरौह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उन से उस तरफ़⁵⁶ दो औरतें देखीं

تَدُودِنِ ٥٧ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ٥٨ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصَدِرَ الرِّعَاءُ ٥٩ وَ

कि अपने जानवरों को रोक रही हैं⁵⁷ मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या हाल है⁵⁸ वोह बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जब तक सब चरवाहे पिला कर फेर न ले जाएं⁵⁹ और

أَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ٦٠ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي

हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं⁶⁰ तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिला दिया फिर साए की तरफ़ फिरा⁶¹ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं

لِيَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ٦٢ فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَشْتِي عَلَىٰ

उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोहताज हूँ⁶² तो उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म

51 : यह बात खैर ख़्वाही और मस्लहत अन्देशी से कहता हूँ। 52 : या'नी कौमे फिरऔन से। 53 : मद्यन वोह मकाम है जहाँ हज़रते शुऐब

तशरीफ़ रखते थे। इस को मद्यन इब्ने इब्राहीम कहते हैं, मिस्र से यहाँ तक आठ रोज़ की मसाफ़त है, यह शहर फिरऔन के

हुदूदे क़लम रब (सलतनत की हुदूद) से बाहर था, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस का रास्ता भी न देखा था न कोई सुवारी साथ थी न तोशा

न कोई हमराही, राह में दरख्तों के पत्तों और ज़मीन के सब्जे के सिवा ख़ूराक की और कोई चीज़ न मिलती थी। 54 : चुनान्चे **अब्लाह**

तआला ने एक फिरिशता भेजा जो आप को मद्यन तक ले गया। 55 : या'नी कूएं पर जिस से वहाँ के लोग पानी लेते और अपने जानवरों

को सैराब करते थे, यह कूवां शहर के कनारे था। 56 : या'नी मर्दों से अलाहदा 57 : इस इन्तिज़ार में कि लोग फ़रिग हों और कूवां ख़ाली हो क्यूं

कि कूएं को क़वी और ज़ोर आवर लोगों ने घेर रखा था, उन के हुजूम में औरतों से मुम्किन न था कि अपने जानवरों को पानी पिला सकतीं। 58 :

या'नी अपने जानवरों को पानी क्यूं नहीं पिलाती ? 59 : क्यूं कि न हम मर्दों के अम्बोह (हुजूम) में जा सकते हैं न पानी खींच सकते हैं, जब

येह लोग अपने जानवरों को पानी पिला कर वापस हो जाते हैं तो हौज़ में जो पानी बच रहता है वोह हम अपने जानवरों को पिला लेते हैं।

60 : जईफ़ हैं खुद येह काम नहीं कर सकते इस लिये जानवरों को पानी पिलाने की ज़रूरत हमें पेश आई। जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की

बातें सुनीं तो आप को रिक्कत आई और रहम आया और वहीं दूसरा कूवां जो उस के करीब था और एक बहुत भारी पथ्थर उस पर ढका हुआ

था जिस को बहुत से आदमी मिल कर हटा सकते थे आप ने तन्हा उस को हटा दिया। 61 : धूप और गरमी की शिद्दत थी और आप ने कई

रोज़ से खाना भी नहीं खाया था, भूक का ग़लबा था इस लिये आराम हासिल करने की गरज़ से एक दरख़्त के साए में बैठ गए और बारगाहे इलाही

में 62 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को खाना मुलाहज़ा फ़रमाए पूरा हफ़्ता गुजर चुका था, इस दरमियान में एक लुक़्मा तक न खाया था, शिकमे मुबारक

पुशते अक्दस से मिल गया था, इस हालत में अपने रब से गिज़ा त़लब की और बा वुजूदे कि बारगाहे इलाही में निहायत कुर्बो मन्ज़िलत

रखते हैं इस इज्जो इन्किसारी के साथ रोटी का एक टुकड़ा त़लब किया। और जब वोह दोनों साहिब जादियां उस रोज़ बहुत जल्द अपने मकान

वापस हो गईं तो उन के वालिदे माजिद ने फ़रमाया कि आज इस क़दर जल्द वापस आ जाने का क्या सबब हुआ ? अर्ज़ किया कि हम ने एक

اسْتَحْيَاءٍ ۗ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۗ

से चलती हुई⁶³ बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मजदूरी दे उस की जो तुम ने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है⁶⁴

فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقِصَصَ ۗ قَالَ لَا تَخَفْ ۗ وَقَفْنَا ۗ نَجُوتَ مِنْ

जब मूसा उस के पास आया और उसे बातें कह सुनाई⁶⁵ उस ने कहा डरिये नहीं आप बच गए

الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ ٢٥ ۗ قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۗ إِنَّ خَيْرَ

जालिमों से⁶⁶ उन में की एक बोली⁶⁷ ऐ मेरे बाप इन को नोकर रख लो⁶⁸ बेशक बेहतर

مَنْ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ۝ ٢٦ ۗ قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُتْكِكَ

नोकर वोह जो ताकत वर अमानत दार हो⁶⁹ कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में

إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثِنْتَيْ حَبَجٍ ۗ فَإِنْ أَتَيْتَ

से एक तुम्हें बियाह दू⁷⁰ इस महर पर कि तुम आठ बरस मेरी मुलाजमत करो⁷¹ फिर अगर पूरे दस

عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۗ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۗ سَتَجِدُنِي إِنْ

बरस कर लो तो तुम्हारी तरफ से है⁷² और मैं तुम्हें मशकूत में डालना नहीं चाहता⁷³ करीब है

नेक मर्द पाया, उस ने हम पर रहम किया और हमारे जानवरों को सैराब कर दिया। इस पर उन के वालिद साहिब ने एक साहिब जादी से फरमाया कि जाओ और उस मर्द सालेह को मेरे पास बुला लाओ 63 : चेहरा आस्तीन से ढके जिस्म छुपाए, येह बड़ी साहिब जादी थीं, इन का नाम सफूरा है। और एक कौल येह है कि वोह छोटी साहिब जादी थीं। 64 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उजरत लेने पर राजी न हुए लेकिन हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की जियारत और उन की मुलाकात के कस्द से चले और उन साहिब जादी साहिबा से फरमाया कि आप मेरे पीछे रह कर रस्ता बताती जाइये। येह आप ने पर्दे के एहतियाम के लिये फरमाया, और इस तरह तशरीफ लाए। जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचे तो खाना हाजिर था, हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने फरमाया बैठिये खाना खाइये। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मन्जूर न किया और अन्देशा है कि येह खाना मेरे उस अमल का इवज न हो जाए जो मैं ने आप के जानवरों को पानी पिला कर अन्जाम दिया है क्यूं कि हम वोह लोग हैं कि अमले खैर पर इवज लेना कबूल नहीं करते। हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने फरमाया : ऐ जवान ! ऐसा नहीं है, येह खाना आप के अमल के इवज में नहीं बल्कि मेरी और मेरे आबाओ अज्दाद की आदत है कि हम मेहमान खानी किया करते हैं और खाना खिलाते हैं। तो आप बैठे और आप ने खाना तनावुल फरमाया। 65 : और तमाम वाकिअत व अहवाल जो फिरऔन के साथ गुजरे थे अपनी विलादत शरीफ से ले कर क़त्ल और फिरऔनियों के आप के दरपै जान होने तक के सब हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام से बयान कर दिये 66 : या'नी फिरऔन और फिरऔनियों से क्यूं कि यहां मद्यन में फिरऔन की हुकूमत व सल्तनत नहीं। मसाइल : इस से साबित हुवा कि एक शख्स की खबर पर अमल करना जाइज है। ख्वाह वोह गुलाम हो या औरत हो और येह भी साबित हुवा कि अज्बिय्या के साथ वरअ व एहतियात के साथ चलना जाइज है। (मारक) 67 : जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को बुलाने के वासिते भेजी गई थी, बड़ी या छोटी। 68 : येह हमारी बकरियां चराया करें और येह काम हमें न करना पड़े। 69 : हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने साहिब जादी से दरयाफ्त किया कि तुम्हें इन की कुव्वत व अमानत का क्या इल्म ? उन्हों ने अर्ज किया कि कुव्वत तो इस से जाहिर है कि इन्हों ने तन्हा कूएं पर से वोह पथ्थर उठा लिया जिस को दस से कम आदमी नहीं उठा सकते और अमानत इस से जाहिर है कि इन्हों ने हमें देख कर सर झुका लिया और नजर न उठाई और हम से कहा कि तुम पीछे चलो ऐसा न हो कि हवा से तुम्हारा कपड़ा उड़े और बदन का कोई हिस्सा नुमूदार हो। येह सुन कर हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से 70 : येह वा'दा निकाह का था अल्फाजे अक़द न थे क्यूं कि मस्अला : अक़द के लिये सीगए माजी ज़रूरी है। मस्अला : और ऐसे ही मन्कूहा की ता'यीन भी ज़रूरी है। 71 मस्अला : आजाद मर्द का आजाद औरत से निकाह किसी दूसरे आजाद शख्स

شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٤﴾ قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَيُّهَا

مैं तुम मुझे नेकों में पाओगे⁷⁴ मूसा ने कहा यह मेरे और आप के दरमियान इक्वार हो चुका मैं

إِلَّا جَلِينَ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

इन दोनों में जो मीआद पूरी कर दू⁷⁵ तो मुझ पर कोई मुतालबा नहीं और हमारे इस कहे पर **अल्लाह** का जिम्मा है⁷⁶

فَلَمَّا قَضَى مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ

फिर जब मूसा ने अपनी मीआद पूरी कर दी⁷⁷ और अपनी बीबी को ले कर चला⁷⁸ तूर की तरफ से एक आग

نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا الْعَلِيِّ اتَيْتُكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ

देखी⁷⁹ अपनी घर वाली से कहा तुम ठहरो मुझे तूर की तरफ से एक आग नजर पड़ी है शायद मैं वहां से कुछ खबर लाऊं⁸⁰

أَوْ جَذْوَةٍ مِنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِنْ

या तुम्हारे लिये कोई आग की चिगारी लाऊं कि तुम तापो फिर जब आग के पास हाजिर हुवा निदा की गई

شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْسَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبْرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يَسُودِيَ

मैदान के दहने कनारे से⁸¹ बरकत वाले मक़ाम में पेड़ से⁸² कि ऐ मूसा

إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾ وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ

बेशक मैं ही हूँ **अल्लाह** रब सारे जहान का⁸³ और यह कि डाल दे अपना असा⁸⁴ फिर जब मूसा ने उसे देखा लहराता हुवा

की खिदमत करने या बकरियाँ चराने को महर करार दे कर जाइज़ है। **मस्अला** : और अगर आज़ाद मर्द ने किसी मुहत तक औरत की खिदमत करने को या कुरआन की ता'लीम को महर करार दे कर निकाह किया तो निकाह जाइज़ है और यह चीज़ें महर न हो सकेंगी बल्कि इस सूत में महेरे मिस्त लाज़िम होगा। (हदाय़े अहमदी) : **72** : या'नी यह तुम्हारी मेहरबानी होगी और तुम पर वाजिब न होगा **73** : कि तुम पर पूरे दस साल लाज़िम कर दूँ। **74** : तो मेरी तरफ से हुस्ने मुआमलत और वफ़ाए अहद ही होगी और **75** : आप ने **अल्लाह** तआला की तौफ़ीक़ व मदद पर भरोसा करने के लिये फ़रमाया। **75** : ख़्वाह दस साल की या आठ साल की **76** : फिर जब आप का अक़द हो चुका तो हज़रते शुऐब **عَلَيْهِ السَّلَام** ने अपनी साहिब जादी को हुकम दिया कि वोह हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को एक असा दें जिस से वोह बकरियों की निगहबानी करें और दरिन्दों को दफ़अ करें। हज़रते शुऐब **عَلَيْهِ السَّلَام** के पास अम्बिया **السَّلَام** के कई असा थे, साहिब जादी साहिबा का हाथ हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के असा पर पड़ा जो आप जन्त से लाए थे और अम्बिया उस के वारिस होते चले आए थे और वोह हज़रते शुऐब **عَلَيْهِ السَّلَام** को पहुँचा था। हज़रते शुऐब **عَلَيْهِ السَّلَام** ने यह असा हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को दिया। **77** : हज़रते इब्ने अब्बास **عَنْهُمَا** **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से मरवी है कि आप ने बड़ी मीआद या'नी दस साल पूरे किये फिर हज़रते शुऐब **عَلَيْهِ السَّلَام** से मिस्र की तरफ वापस जाने की इजाज़त चाही, आप ने इजाज़त दी। **78** : उन के वालिद की इजाज़त से मिस्र की तरफ। **79** : जब कि आप जंगल में थे, अंधेरी रात थी, सरदी शिदत की पड़ रही थी, रास्ता गुम हो गया था, उस वक़्त आप ने आग देख कर **80** : राह की, कि किस तरफ है। **81** : जो हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के दस्ते रास्त की तरफ था। **82** : वोह दरख़्त उन्नाब का था या औसज का (औसज एक खारदार दरख़्त है जो जंगलों में होता है)। **83** : जब हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने सर सब्ज़ दरख़्त में आग देखी तो जान लिया कि **अल्लाह** तआला के सिवा यह किसी की कुदरत नहीं और बेशक इस कलाम का **अल्लाह** तआला ही मुतकल्लिम है। यह भी मन्कूल है कि यह कलाम हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने सिर्फ़ गोशे मुबारक ही से नहीं बल्कि अपने जिस्मे अक़दस के हर हर जुज़ से सुना। **84** : चुनान्चे आप ने असा डाल दिया वोह सांप बन गया।

كَانَهَا جَانٌّ وَلِيٌّ مُدْبِرًا ۖ وَلَمْ يُعَقِّبْ ۗ يَمُوسَىٰ أَقْبَلُ وَلَا تَخَفْ ۗ إِنَّكَ

गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा⁸⁵ ऐ मूसा सामने आ और डर नहीं बेशक तुझे

مِنَ الْأَمْنِينَ ۖ ۚ أَسْلَكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ

अमान है⁸⁶ अपना हाथ⁸⁷ गिरेबान में डाल निकलेगा सफेद चमकता बे

سُوءٍ ۗ وَأَضْمَمُ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۖ فَذَنْبِكَ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكَ

ऐब⁸⁸ और अपना हाथ अपने सीने पर रख ले खौफ दूर करने को⁸⁹ तो यह दो हज्जते हैं तेरे रब की⁹⁰

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۖ ۚ قَالَ رَبِّ إِنِّي

फिरऔन और उस के दरबारियों की तरफ बेशक वोह बे हुकम (ना फरमान) लोग हैं अर्ज की ऐ मेरे रब में

قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۖ ۚ وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ

ने उन में एक जान मार डाली है⁹¹ तो डरता हूं कि मुझे क़त्ल कर दें और मेरा भाई हारून उस की ज़बान

مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسَلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۗ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۖ ۚ

मुझ से ज़ियादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिये रसूल बना कि मेरी तस्दीक करे मुझे डर है कि वोह⁹² मुझे झुटलाएंगे

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُونَ

फरमाया करीब है कि हम तेरे बाजू को तेरे भाई से कुव्वत देंगे और तुम दोनों को ग़लबा अता फरमाएंगे तो वोह तुम दोनों का कुछ नुक़सान

إِلَيْكُمَا ۖ بِأَيْتِنَا ۗ أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَا ۖ الْغٰلِبُونَ ۖ ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ

न कर सकेगे हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब आओगे⁹³ फिर जब मूसा उन के

مُوسَىٰ بِأَيْتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَمَا سَبِعْنَا

पास हमारी रोशन निशानियां लाया बोले येह तो नहीं मगर बनावट का जादू⁹⁴ और हम ने अपने अगले

85 : तब निदा की गई 86 : कोई ख़तरा नहीं 87 : अपनी क़मीस के 88 : शुआए आफ़ताब की तरह । तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक गिरेबान में डाल कर निकाला तो उस में ऐसी तेज़ चमक थी जिस से निगाहें झपकीं । 89 : ताकि हाथ अपनी अस्ली हालत पर आए और खौफ़ रफ़अ हो जाए । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फरमाया कि **اَللّٰهُ** तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को सीने पर हाथ रखने का हुकम दिया ताकि जो खौफ़ सांप देखने के वक़्त पैदा हो गया था रफ़अ हो जाए और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जो खौफ़जदा अपना हाथ सीने पर रखेगा उस का खौफ़ दफ़अ हो जाएगा । 90 : या'नी असा और यदे बैजा तुम्हारी रिसालत की बुरहानें हैं 91 : या'नी क़िज़ी मेरे हाथ से मारा गया है 92 : या'नी फिरऔन और उस की क़ौम 93 : फिरऔन और उस की क़ौम पर । 94 : उन बद नसीबों ने मो'जिज़ात का इन्कार कर दिया और उन को जादू बता दिया । मतलब येह था कि जिस तरह तमाम अन्वाए सेहर बातिल होते हैं इसी तरह **مَعَاذَ اللهِ** येह भी है ।

بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوْلِيَيْنِ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ

बाप दादाओं में ऐसा न सुना⁹⁵ और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो उस के

بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ

पास से हिदायत लाया⁹⁶ और जिस के लिये आख़िरत का घर होगा⁹⁷ बेशक ज़ालिम मुराद

الظَّالِمُونَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهِ

को नहीं पहुंचते⁹⁸ फिरऔन बोला ऐ दरबारियो ! मैं तुम्हारे लिये अपने सिवा

غَيْرِي ۚ فَأَوْقِدْ لِي يَا مِثْرَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا لَعَلِّي أَبْلِغُ

कोई खुदा नहीं जानता तो ऐ हामान मेरे लिये गारा पक्का कर⁹⁹ एक महल बना¹⁰⁰ कि शायद मैं मूसा

إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ ۗ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَ

के खुदा को झांक आऊँ¹⁰¹ और बेशक मेरे गुमान में तो वोह¹⁰² झूटा है¹⁰³ और उस ने और उस के

جُنُودَهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

लश्करियों ने ज़मीन में बे जा बड़ाई चाही¹⁰⁴ और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

तो हम ने उसे और उस के लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया¹⁰⁵ तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى النَّارِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا

सितम गारों का और उन्हें हम ने¹⁰⁶ दोज़खियों का पेशवा बनाया कि आग की तरफ़ बुलाते हैं¹⁰⁷ और क़ियामत के दिन

يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ

उन की मदद न होगी और इस दुनिया में हम ने उन के पीछे ला'नत लगाई¹⁰⁸ और क़ियामत के दिन उन

95 : या'नी आप से पहले ऐसा कभी नहीं किया गया । या येह मा'ना हैं कि जो दा'वत आप हमें देते हैं वोह ऐसी नई है कि हमारे आबाओ

अज्दाद में भी ऐसी नहीं सुनी गई थी 96 : या'नी जो हक़ पर है और जिस को **alccius** तअ़ाला ने नुबुव्वत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया ।

97 : और वोह वहां की ने'मतों और रहमतों के साथ नवाज़ा जाएगा । 98 : या'नी काफ़िरों को आख़िरत की फ़लाह मुयस्सर नहीं । 99 : ईट

तय्यार कर । कहते हैं कि येही दुनिया में सब से पहले ईट बनाने वाला है, येह सन्'अत इस से पहले न थी । 100 : निहायत बुलन्द 101 : चुनान्चे

हामान ने हज़ारहा कारीगर और मज़दूर जम्अ किये, ईटें बनवाई और इमारती सामान जम्अ कर के इतनी बुलन्द इमारत बनवाई कि दुनिया में

उस के बराबर कोई इमारत बुलन्द न थी, फिरऔन ने येह गुमान किया कि (مَعَادِ اللَّهِ) **alccius** तअ़ाला के लिये भी मकान है और वोह जिस्म

है कि उस तक पहुंचना इस के लिये मुम्किन होगा । 102 : या'नी मूसा عَلَيْهِ السَّلَام 103 : अपने इस दा'वे में कि उस का एक मा'बूद है जिस

ने उस को अपना रसूल बना कर हमारी तरफ़ भेजा । 104 : और हक़ को न माना और बातिल पर रहे 105 : और सब गुक़ हो गए । 106 :

दुनिया में 107 : या'नी कुफ़्र व मअ़ासी की दा'वत देते हैं जिस से अज़ाबे जहन्नम के मुस्तहक़ हों और जो इन की इताअत करे वोह भी जहन्नमी

हो जाए । 108 : या'नी रुस्वाई और रहमत से दूरी ।

مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ٢٢ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا

का बुरा है और बेशक हम ने मूसा को किताब अता फ़रमाई¹⁰⁹ बा'द इस के कि अगली संगतें (कौमों)¹¹⁰

الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بِصَآئِرٍ لِلنَّاسِ وَهَدَىٰ وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ٢٣ ۝

हलाक फ़रमा दीं जिस में लोगों के दिल की आंखें खोलने वाली बातें और हिदायत और रहमत ताकि वोह नसीहत मानें

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعَرَبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ

और तुम¹¹¹ तूर की जानिबे मगरिब में न थे¹¹² जब कि हम ने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा¹¹³ और उस वक़्त तुम

مِنَ الشَّاهِدِينَ ٢٤ ۝ وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَ

हाज़िर न थे मगर हुवा येह कि हम ने संगतें पैदा कीं¹¹⁴ कि उन पर ज़मानए दराज़ गुज़रा¹¹⁵ और

مَا كُنْتَ شَاوِيًّا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتَلَوُا عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا

न तुम अहले मद्यन में मुक़ीम थे उन पर हमारी आयतें पढ़ते हुए हां हम

مُرْسِلِينَ ٢٥ ۝ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِن رَّحِمَةً

रसूल बनाने वाले हुए¹¹⁶ और न तुम तूर के कनारे थे जब हम ने निदा फ़रमाई¹¹⁷ हां तुम्हारे रब की

مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَهُمْ مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ

मेहर है (कि तुन्हें ग़ैब के इल्म दिये)¹¹⁸ कि तुम ऐसी कौम को डर सुनाओ जिस के पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया¹¹⁹ येह उम्मीद करते हुए कि

يَتَذَكَّرُونَ ٢٦ ۝ وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ

उन को नसीहत हो और अगर न होता कि कभी पहुंचती उन्हें कोई मुसीबत¹²⁰ उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा¹²¹

فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَتَتَّبِعِ آيَاتِكَ وَنَكُونَ

तो कहते ऐ हमारे रब तू ने क्यूं न भेजा हमारी तरफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और

109 : يا'नी तौरैत । 110 : मिस्ल कौमे नूह व आद व समूद वगैरा के । 111 : ऐ सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ । 112 : वोह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मीकात था । 113 : और उन से कलाम फ़रमाया और उन्हें मुक़रब किया । 114 : या'नी बहुत सी उम्मतें, बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के । 115 : तो वोह **اَعْلَاف** का अहद भूल गए और उन्होंने ने उस को फ़रमां बरदारी तर्क की, और इस की हकीकत येह है कि **اَعْلَاف** तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन की कौम से सय्यिदे आलम हबीबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के हक़ में और आप पर इमान लाने के मुतअल्लिक अहद लिये थे । जब दराज़ ज़माना गुज़रा और उम्मतों के बा'द उम्मतें गुज़रती चली गईं तो वोह लोग उन अहदों को भूल गए और उस की वफ़ा तर्क कर दी । 116 : तो हम ने आप को इल्म दिया और पहलों के हालात पर मुत्तलअ किया । 117 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तौरैत अता फ़रमाने के वक़्त । 118 : जिन से तुम उन के अहवाल बयान फ़रमाते हो, आप का इन उमूर की खबर देना आप की नुब्वत की ज़ाहिर दलील है । 119 : इस कौम से मुराद अहले मक्का हैं जो ज़मानए फ़ितरत (दो पैग़म्बरों के दरमियान के ज़माने) में थे, जो हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ व हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान पांच सो पचास बरस की मुदत का है । 120 : अज़ाब व सज़ा । 121 : या'नी जो कुफ़रो

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ

ईमान लाते¹²² फिर जब उन के पास हक़ आया¹²³ हमारी तरफ़ से बोले¹²⁴ इन्हें क्यूं न दिया गया

مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۖ أَوْلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوا

जो मूसा को दिया गया¹²⁵ क्या उस के मुन्किर न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया¹²⁶ बोले

سِحْرَانِ تَظْهَرَا ۚ وَقَالُوا إِنَّا بِكُلِّ كَفْرًا نَقِيرٌ ﴿٢٨﴾ قُلْ فَاتُوا بِي كِتَابٍ مِّنْ

दो जादू हैं एक दूसरे की पुष्टी (इमदाद) पर और बोले हम इन दोनों के मुन्किर हैं¹²⁷ तुम फ़रमाओ तो **अल्लाह** के पास से कोई

عِنْدَ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهَا ۚ اتَّبِعْهُ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾ فَإِنْ لَّمْ

किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़ियादा हिदायत की हो¹²⁸ मैं उस की पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो¹²⁹ फिर अगर

يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ اتَّبَعَ

वोह यह तुम्हारा फ़रमाना कबूल न करें¹³⁰ तो जान लो कि¹³¹ बस वोह अपनी ख़ाहिशों ही के पीछे हैं और उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो अपनी ख़ाहिश की

هُوْهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾

पैरवी करे **अल्लाह** की हिदायत से जुदा बेशक **अल्लाह** हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾ الَّذِينَ اتَّبَعْتَهُمْ

और बेशक हम ने उन के लिये बात मुसलसल उतारी¹³² कि वोह ध्यान करें जिन को हम ने इस से पहले¹³³

इस्यान उन्होंने ने किया 122 : मा'ना आयत के येह हैं कि रसूलों का भेजना ही इलज़ामे हुज्जत के लिये है कि उन्हें येह उज़्र करने की गुन्जाइश न मिले कि हमारे पास रसूल नहीं भेजे गए, इस लिये गुमराह हो गए, अगर रसूल आते तो हम ज़रूर मुतीअ होते और ईमान लाते। 123 : या'नी सख्ियदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ 124 : मक्का के कुफ़र 125 : या'नी उन्हें कुरआने करीम यक्बारगी क्यूं नहीं दिया गया जैसा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को पूरी तौरैत एक ही बार में अता की गई थी। या येह मा'ना हैं कि सख्ियदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को असा और यदे बैजा जैसे मो'जिजात क्यूं न दिये गए ? **अल्लाह** तबारक व तआला फ़रमाता है : 126 : यहूद ने कुरैश को पैग़ाम भेजा कि सख्ियदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के से मो'जिजात तलब करें। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जिन यहूद ने येह सुवाल किया है क्या वोह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के और जो उन्हें **अल्लाह** की तरफ़ से दिया गया है उस के मुन्किर न हुए ? 127 : या'नी तौरैत के भी और कुरआन के भी, इन दोनों को उन्होंने ने जादू कहा। और एक क़िराअत में "साज्रान" है। इस तक्दीर पर मा'ना येह होंगे कि दोनों जादूगर हैं या'नी सख्ियदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام। शाने नुज़ूल : मुशिरकीने मक्का ने यहूदे मदीना के सरदारों के पास कासिद भेज कर दरयाफ्त किया कि सख्ियदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की निस्बत कुतुबे साबिका में कोई ख़बर है ? उन्होंने ने जवाब दिया कि हां हुज़ूर की ना'त व सिफ़त उन की किताब तौरैत में मौजूद है। जब येह ख़बर कुरैश को पहुंची तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام व सख्ियदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की निस्बत कहने लगे कि वोह दोनों जादूगर हैं, उन में एक दूसरे का मुईनो मददगार है। इस पर **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया : 128 : या'नी तौरैत व कुरआन से। 129 : अपने इस क़ौल में कि येह दोनों जादू या जादूगर हैं। इस में तम्बीह है कि वोह इस के मिस्ल किताब लाने से आजिजे महज़ हैं, चुनान्चे आगे इशाद फ़रमाया जाता है 130 : और ऐसी किताब न ला सकें 131 : उन के पास कोई हुज्जत नहीं है। 132 : या'नी कुरआने करीम उन के पास पयापै (मुतावातिर) और मुसलसल आया, वा'द और वईद और क़सस और इब्रतें और मौइज़तें ताकि समझें और ईमान लाएं। 133 : या'नी कुरआन शरीफ़ से या सख्ियदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से पहले। शाने नुज़ूल : येह आयत मोमिनीने अहले किताब हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई। और

الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ

किताब दी वोह उस पर ईमान लाते हैं और जब उन पर येह आयतें पढ़ी जाती हैं कहते हैं हम इस पर ईमान लाए

إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾ أُولَئِكَ يُؤْتُونَ

बेशक येही हक है हमारे रब के पास से हम इस से पहले ही गरदन रख चुके थे¹³⁴ उन को उन का अन्न

أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِصَابِرٍ وَوَاوِيدَ رَأً وَنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ وَمِمَّا

दोबाला दिया जाएगा¹³⁵ बदला उन के सब्र का¹³⁶ और वोह भलाई से बुराई को टालते हैं¹³⁷ और हमारे दिये

رَزَقْتَهُمْ يَنْفِقُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِذَا سَبِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَّا

से कुछ हमारी राह में खर्च करते हैं¹³⁸ और जब बेहूदा बात सुनते हैं उस से तगाफल करते हैं¹³⁹ और कहते हैं हमारे लिये

أَعْبَانَا وَلَكُمْ أَعْبَالِكُمْ سَلِّمْ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾ إِنَّكَ

हमारे अमल और तुम्हारे लिये तुम्हारे अमल बस तुम पर सलाम¹⁴⁰ हम जाहिलों के गरजी (चाहने वाले) नहीं¹⁴¹ बेशक

لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ

येह नहीं कि तुम जिसे अपनी तरफ से चाहे हिदायत कर दो हां **ALLAH** हिदायत फरमाता है जिसे चाहे और वोह खूब जानता है

بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوا إِن تَتَّبِعِ الْهُدَى مَعَكَ نَتَّخِطُ مِنْ

हिदायत वालों को¹⁴² और कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक

एक कौल येह है कि येह उन अहले इन्जील के हक में नाज़िल हुई जो हब्शा से आ कर सय्यदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर ईमान लाए ।

येह चालीस हज़रात थे, हज़रते जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ आए । जब उन्होंने ने मुसलमानों की हाज़त और तंगिये मआश देखी तो

बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि हमारे पास माल हैं, हुज़ूर इजाज़त दें तो हम वापस जा कर अपने माल ले आएँ और उन से मुसलमानों की खिदमत

करें । हुज़ूर ने इजाज़त दी और वोह जा कर अपने माल ले आएँ और उन से मुसलमानों की खिदमत की, उन के हक में येह आयत "مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ"

तक नाज़िल हुई । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि येह आयतें अस्सी⁸⁰ अहले किताब के हक में नाज़िल हुई जिन में

चालीस नजरान के और बत्तीस हब्शा के और आठ शाम के थे । **134** : या'नी नुज़ूले कुरआन से कबल ही हम हबीबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर ईमान रखते थे कि वोह नबिये बरहक हैं क्यूं कि तौरैत व इन्जील में उन का ज़िक्र है । **135** : क्यूं कि वोह पहली किताब

पर भी ईमान लाए और कुरआने पाक पर भी । **136** : कि उन्होंने ने अपने दीन पर भी सब्र किया और मुश्रिकीन की ईज़ा पर भी । बुख़ारी व

मुस्लिम की हदीस में है : सय्यदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि तीन किसम के लोग ऐसे हैं जिन्हें दो अन्न मिलेंगे एक अहले किताब

का वोह शख़्स जो अपने नबी पर ईमान लाया और सय्यदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर भी । दूसरा वोह गुलाम जिस ने **ALLAH**

का हक भी अदा किया और मौला का भी । तीसरा वोह जिस के पास बांदी थी जिस से कुर्बत करता था फिर उस को अच्छी तरह अदब

सिखाया अच्छी ता'लीम दी और आज़ाद कर के उस से निकाह कर लिया उस के लिये भी दो अन्न हैं । **137** : ता'अत से मा'सियत को और हिल्म

से ईज़ा को, हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि तौहीद की शहादत या'नी "أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ" से शिक्र को । **138** : ता'अत में,

या'नी सदक़ा करते हैं । **139** : मुश्रिकीन मक्कए मुकर्रमा के ईमानदारों को उन का दीन तर्क करने और इस्लाम कबूल करने पर गालियां देते और

बुरा कहते, येह हज़रात उन की बेहूदा बातें सुन कर ए'राज़ फ़रमाते **140** : या'नी हम तुम्हारी बेहूदा बातों और गालियों के जवाब में गालियां न

देंगे । **141** : उन के साथ मेलजोल निशस्त व बरखास्त नहीं चाहते, हमें जाहिलाना हरकत गवारा नहीं । (نَسِخَ ذَلِكَ بِالْقِتَالِ) । **142** : जिन के लिये उस

أَرْضِنَا أَوْ لَمْ نُنَكِّنْ لَهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجَبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ

ले जाएंगे¹⁴³ क्या हम ने उन्हें जगह न दी अमान वाली हरम में¹⁴⁴ जिस की तरफ हर चीज के फल

رَأْرُقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٤﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِمَّنْ

लाए जाते हैं हमारे पास की रोजी लेकिन उन में अक्सर को इल्म नहीं¹⁴⁵ और कितने शहर हम ने हलाक

قَرِيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا فِتْلِكَ مَسِكَهُمْ لَمْ تَسْكُنْ مِّنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا

कर दिये जो अपने ऐश पर इतरा गए थे¹⁴⁶ तो ये हैं उन के मकान¹⁴⁷ कि उन के बा'द इन में सुकूनत न हुई मगर

قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ

कम¹⁴⁸ और हमी वारिस है¹⁴⁹ और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक

يَبْعَثَ فِي أُمِّهَاسُؤْلًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۖ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ

उन के अस्ल मरजअ में रसूल न भेजे¹⁵⁰ जो उन पर हमारी आयतें पढ़े¹⁵¹ और हम शहरों को हलाक नहीं करते

إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٦﴾ وَمَا أَوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

मगर जब कि उन के साकिन सितम गार हों¹⁵² और जो कुछ चीज तुम्हें दी गई है वोह दुन्यवी जिन्दगी का बरतावा

ने हिदायत मुकद्दर फरमाई, जो दलाइल से पन्द पजीर होने और हक बात मानने वाले हैं। शाने नुजूल : मुस्लिम शरीफ में हजरते अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से मरबी है कि येह आयत अबू तालिब के हक में नाजिल हुई, नबिये करीम صل الله تعالى عليه وسلم ने उन से उन की मौत के वक्त फरमाया : ऐ चचा ! कह "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ" मैं तुम्हारे लिये रोजे कियामत शाहिद होउंगा। उन्हीं ने कहा कि अगर मुझे कुरेश के आर देने का अन्देशा न होता तो मैं जरूर ईमान ला कर तुम्हारी आंख ठन्डी करता। इस के बा'द उन्हीं ने येह शेर पढ़े "وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ بَانَ دِينَ مُحَمَّدٍ مِّنْ خَيْرِ آذْيَانِ الْبَرِيَّةِ دِينًا لَّا لَآ الْعِلْمَةُ أَوْ حِذَارٌ مُّسَبِّةٌ لَوْ جِدْتَنِي سَمْعًا بِذَلِكَ مُبِينًا" या'नी मैं यकीन से जानता हूँ कि मुहम्मद صل الله تعالى عليه وسلم का दीन तमाम जहानों के दीनों से बेहतर है अगर मलामत व बदगोई का अन्देशा न होता तो मैं निहायत सफाई के साथ इस दीन को कबूल करता। इस के बा'द अबू तालिब का इन्तिकाल हो गया, इस पर येह आयते करीमा नाजिल हुई। 143 : या'नी सर जमीने अरब से एक दम निकाल देंगे। शाने नुजूल : येह आयत हारिस बिन उस्मान बिन नौफल बिन अब्दे मनाफ के हक में नाजिल हुई। उस ने नबिये करीम صل الله تعالى عليه وسلم से कहा था कि येह तो हम यकीन से जानते हैं कि जो आप फरमाते हैं वोह हक है लेकिन अगर हम आप के दीन का इत्तिबाअ करें तो हमें डर है कि अरब के लोग हमें शहर बदर कर देंगे और हमारे वतन में न रहने देंगे। इस आयत में इस का जवाब दिया गया। 144 : जहां के रहने वाले कल्लो गारत से अम्म में हैं और जहां जानवरों और सब्जों तक को अम्म है। 145 : और वोह अपनी जहालत से नहीं जानते कि येह रोजी **اَللّٰهُ** तआला की तरफ से है अगर येह समझ होती तो जानते कि खौफ व अम्म भी उसी की तरफ से है और ईमान लाने में शहर बदर किये जाने का खौफ न करते। 146 : और उन्हीं ने तुग्यान इख्तियार किया था कि **اَللّٰهُ** तआला की दी हुई रोजी खाते और पूजते बुतों को, अहले मक्का को ऐसी कौम के खराब अन्जाम से खौफ दिलाया जाता है जिन का हाल उन की तरह था कि **اَللّٰهُ** तआला की ने'मतें पाते और शुक्र न करते, उन ने'मतों पर इतराते, वोह हलाक कर दिये गए। 147 : जिन के आसार बाकी हैं और अरब के लोग अपने सफ़रों में उन्हें देखते हैं। 148 : कि कोई मुसाफिर या रहरव (राह चलता) इन में थोड़ी देर के लिये ठहर जाता है फिर खाली पड़े रहते हैं। 149 : इन मकानों के। या'नी वहां के रहने वाले ऐसे हलाक हुए कि उन के बा'द उन का कोई जा नशीन बाकी न रहा, अब **اَللّٰهُ** के सिवा इन मकानों का कोई वारिस नहीं, खल्क की फना के बा'द वोही सब का वारिस है। 150 : या'नी मर्कजी मकाम में। बा'ज मुफरिसरीने ने कहा कि उम्मुल कुरा से मुराद मक्कए मुकरमा है और रसूल से मुराद ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صل الله تعالى عليه وسلم। 151 : और उन्हें तब्तीग करे और ख़बर दे कि अगर वोह ईमान न लाएंगे तो उन पर अज़ाब किया जाएगा ताकि उन पर हुज्जत लाजिम हो और उन के लिये उज़्र की गुन्जाइश बाकी न रहे। 152 : रसूल की तक्ज़ीब करते हों, अपने कुफ़र पर मुसिर (डटे हुए) हों और इस सबब से अज़ाब के

وَزَيَّنَّهَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى ٦٠ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦٠ أَفَسِنُ وَعَدْنُهُ

और उस का सिंघार है¹⁵³ और जो **अल्लाह** के पास है¹⁵⁴ वोह बेहतर और ज़ियादा बाकी रहने वाला¹⁵⁵ तो क्या तुम्हें अक्ल नहीं¹⁵⁶ तो क्या वोह जिसे हम ने

وَعَدَّا حَسَنًا فَهُوَ لَا قِيَّةَ لَكُمْ مَّتَّعْنَاهُ مَتَاءَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ

अच्छा वा'दा दिया¹⁵⁷ तो वोह उस से मिलेगा उस जैसा है जिसे हम ने दुन्यवी ज़िन्दगी का बरताव बरतने दिया फिर वोह क्रियामत

الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ٦١ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ

के दिन गिरिफ़्तार कर के हाज़िर लाया जाएगा¹⁵⁸ और जिस दिन उन्हें निदा करेगा¹⁵⁹ तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ٦٢ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا

वोह शरीक जिन्हें तुम¹⁶⁰ गुमान करते थे कहेंगे वोह जिन पर बात साबित हो चुकी¹⁶¹ ऐ हमारे ख

هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا

येह हैं वोह जिन्हें हम ने गुमराह किया हम ने उन्हें गुमराह किया जैसे खुद गुमराह हुए थे¹⁶² हम उन से बेज़ार हो कर तेरी तरफ़ रुजूअ लाते हैं वोह

إِنَّا نَاعِبُدُونَ ٦٣ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمُ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا

हम को न पूजते थे¹⁶³ और उन से फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो¹⁶⁴ तो वोह पुकारेंगे तो वोह उन की न

لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ٦٤ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ

सुनेंगे और देखेंगे अज़ाब क्या अच्छा होता अगर वोह राह पाते¹⁶⁵ और जिस दिन उन्हें निदा करेगा

فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الرُّسُلِينَ ٦٥ فَعَبَّيْتُ عَلَيْهِمُ الْآثَابَ

तो फ़रमाएगा¹⁶⁶ तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया¹⁶⁷ तो उस दिन उन पर ख़बरें अन्धी

يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ٦٦ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

हो जाएंगी¹⁶⁸ तो वोह कुछ पूछगछ न करेंगे¹⁶⁹ तो वोह जिस ने तौबा की¹⁷⁰ और ईमान लाया¹⁷¹ और अच्छा काम किया

मुस्तहिक हों। 153 : जिस की बका बहुत थोड़ी और जिस का अन्जाम फना। 154 : या'नी आखिरत के मनाफ़ेअ 155 : तमाम कदरतों से खाली और दाइम, गैर मुन्क़तअ। 156 : कि इतना समझ सको कि बाकी फ़ानी से बेहतर है, इसी लिये कहा गया है कि जो शख्स आखिरत को दुन्या पर तरजीह न दे वोह नादान है। 157 : सवाबे जन्नत का। 158 : येह दोनों हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते, इन में पहला जिसे अच्छा वा'दा दिया गया मोमिन है और दूसरा काफ़िर। 159 : **अल्लाह** तआला ब तरीके तौबीख 160 : दुन्या में मेरा शरीक 161 : या'नी अज़ाब वाजिब हो चुका और वोह लोग अहले ज़लालत (गुमराहों) के सरदार और अइम्मए कुफ़र हैं। 162 : या'नी वोह लोग हमारे बहकाने से ब इख़्तियारे खुद गुमराह हुए हमारी उन की गुमराही में कोई फ़क़ नहीं हम ने उन्हें मजबूर न किया था। 163 : बल्कि वोह अपनी ख़्वाहिशों के परस्तार और अपनी शहवात के मुतीअ थे। 164 : या'नी कुफ़ार से फ़रमाया जाएगा कि अपने बुतों को पुकारो वोह तुम्हें अज़ाब से बचाए 165 : दुन्या में ताकि आखिरत में अज़ाब न देखते। 166 : या'नी कुफ़ार से दरयाफ़्त फ़रमाएगा 167 : जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए थे और हक़ की दा'वत देते थे। 168 : और कोई उज़्र और हुज्जत उन्हें नज़र न आएगी 169 : और ग़ायते दहशत से साकित रह जाएंगे या कोई

فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْبُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَ

क़रीब है कि वोह राहयाब हो और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और

يَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

पसन्द फ़रमाता है¹⁷² उन का¹⁷³ कुछ इख़्तियार नहीं पाकी और बरतरी है **अल्लाह** को उन के शिर्क से

وَ رَّبُّكَ يَعْلَمُ مَا تَكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ

और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है¹⁷⁴ और जो ज़ाहिर करते हैं¹⁷⁵ और वोही है **अल्लाह** कि

إِلَٰهُوَ ۗ لَهُ الْحُدُودُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۗ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ

कोई खुदा नहीं उस के सिवा उसी की ता'रीफ़ है दुन्या और आख़िरत में¹⁷⁶ और उसी का हुक़म है¹⁷⁷ और उसी की तरफ़

تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ

फिर जाओगे तुम फ़रमाओ¹⁷⁸ भला देखो तो अगर **अल्लाह** हमेशा तुम पर

يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ إِلَٰهِ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۗ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾ قُلْ

क़ियामत तक रात रखे¹⁷⁹ तो **अल्लाह** के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हें रोशनी ला दे¹⁸⁰ तो क्या तुम सुनते नहीं¹⁸¹ तुम फ़रमाओ

أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

भला देखो तो अगर **अल्लाह** क़ियामत तक हमेशा दिन रखे¹⁸²

مِنْ إِلَٰهِ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بَلِيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۗ أَفَلَا تَبْصُرُونَ ﴿٧٢﴾ وَ

तो **अल्लाह** के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हें रात ला दे जिस में आराम करो¹⁸³ तो क्या तुम्हें सूझता नहीं¹⁸⁴ और

किसी से इस लिये न पूछेगा कि जवाब से आज़िज़ होने में सब के सब बराबर हैं ताबेअ हों या मत्वअ काफ़िर हों या काफ़िर गर । 170 : शिर्क से 171 : अपने रब पर और उस तमाम पर जो रब की तरफ़ से आया 172 शाने नुज़ूल : यह आयत मुशिरकीन के जवाब में नाज़िल हुई, जिन्होंने कहा था कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को नुबुव्वत के लिये क्यूं बरगुज़ादा किया ? यह कुरआन मक्का व ताइफ़ के किसी बड़े शख्स पर क्यूं न उतारा ? इस कलाम का काइल वलीद बिन मुगीरा था और बड़े आदमी से वोह अपने आप को और उर्वह बिन मस्ऊद सक़फ़ी को मुराद लेता था । उस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है **अल्लाह** तआला की मरज़ी है अपनी हिकमत वोही जानता है, उन्हें उस की मरज़ी में दख़ल की क्या मजाल । 173 : या'नी मुशिरकीन का 174 : या'नी कुफ़्र और रसूले करीम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की अ़दावत जिस को येह लोग छुपाते हैं 175 : अपनी ज़बानों से ख़िलाफ़े वाक़ेअ जैसे कि नुबुव्वत में ता'न करना और कुरआने पाक की तकज़ीब । 176 : कि उस के औलिया दुन्या में भी उस की हम्द करते हैं और आख़िरत में भी उस की हम्द से लज़ज़त उठाते हैं । 177 : उसी की क़ज़ा हर चीज़ में नाफ़िज़ व जारी है । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अपने फ़रमां बरदारों के लिये मग़िफ़रत का और ना फ़रमानों के लिये शफ़ाअत का हुक़म फ़रमाता है । 178 : ऐ हबीब صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! अहले मक्का से 179 : और दिन निकाले ही नहीं 180 : जिस में तुम अपनी मआश के काम कर सको । 181 : गोशे होश से कि शिर्क से बाज़ आओ । 182 : रात होने ही न दे 183 : और दिन में जो काम और मेहनत की थी उस की तकान दूर करो । 184 : कि तुम कितनी बड़ी ग़लती में हो जो उस के साथ और को शरीक करते हो ।

مِنْ رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ

उस ने अपनी मेहर (रहमत) से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज्र

فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٣﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ

दूँडो¹⁸⁵ और इस लिये कि तुम हक़ मानो¹⁸⁶ और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٤٤﴾ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا

वोह शरीक जो तुम बकते थे और हर गुरौह में से हम एक गवाह निकाल कर¹⁸⁷ फ़रमाएंगे अपनी

بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٤٥﴾ إِنَّ

दलील लाओ¹⁸⁸ तो जान लेंगे कि¹⁸⁹ हक़ **अल्लाह** का है और उन से खोई जाएंगी जो बनावटें करते थे¹⁹⁰ बेशक

قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا

कारून मूसा की कौम से था¹⁹¹ फिर उस ने उन पर ज़ियादती की और हम ने उस को इतने खज़ाने दिये

إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوزًا بِالْعُسْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ

जिन की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअत पर भारी थीं जब उस से उस की कौम¹⁹² ने कहा इतरा नहीं¹⁹³

إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٤٦﴾ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ

बेशक **अल्लाह** इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे **अल्लाह** ने दिया है उस से आखिरत का घर त़लब कर¹⁹⁴

وَلَا تَسْسِ نَفْسِيكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا

और दुन्या में अपना हिस्सा न भूल¹⁹⁵ और एहसान कर¹⁹⁶ जैसा **अल्लाह** ने तुझ पर एहसान किया और¹⁹⁷

185 : कस्बे मआश करो **186** : और उस की ने'मतों का शुक्र बजा लाओ। **187** : यहां गवाह से रसूल मुराद हैं जो अपनी अपनी उम्मतों पर शहादत देंगे कि उन्होंने ने इन्हें रब के पयाम पहुंचाए और नसीहतें कीं। **188** : या'नी शिर्क और रसूलों की मुख़ालफ़त जो तुम्हारा शेवा था, इस पर क्या दलील है? पेश करो। **189** : इलाहियत व मा'बूदियत खास **190** : दुन्या में कि **अल्लाह** तआला के साथ शरीक ठहराते थे। **191** : कारून हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के चचा "यस्हर" का बेटा था, निहायत ख़ूब सूरत शकील आदमी था, इसी लिये इस को मुनव्वर कहते थे और बनी इसराईल में तौरैत का सब से बेहतर कारी था, नादारी के ज़माने में निहायत मुतवाज़ेअ व बा अख़्लाक़ था, दौलत हाथ आते ही इस का हाल मुतग़य्यिर हुवा और सामिरी की तरह मुनाफ़िक़ हो गया। कहा गया है कि फ़िरऔन ने इस को बनी इसराईल पर हाकिम बना दिया था। **192** : या'नी मोमिनीने बनी इसराईल **193** : कस्ते माल पर **194** : **अल्लाह** की ने'मतों का शुक्र कर के और माल को खुदा की राह में ख़र्च कर के। **195** : या'नी दुन्या में आख़िरत के लिये अमल कर कि अज़ाब से नजात पाए, इस लिये कि दुन्या में इन्सान का हक़ीकी हिस्सा येह है कि आख़िरत के लिये अमल करे, सदका दे कर, सिलए रेहमी कर के और आ'माले ख़ैर के साथ। और इस की तफ़सीर में येह भी कहा गया है कि अपनी सिह्हत व कुव्वत व जवानी व दौलत को न भूल इस से कि इन के साथ आख़िरत त़लब करे। हदीस में है कि पांच चीज़ों को पांच से पहले गुनीमत समझो। जवानी को बुढ़ापे से पहले, तन्दुरुस्ती को बीमारी से पहले, सरवत को नादारी से पहले, फ़रागत को शग़ल से पहले, ज़िन्दगी को मौत से पहले। **196** : **अल्लाह** के बन्दों के साथ। **197** : मआसी और गुनाहों का इरतिकाब कर के और जुल्म व बगावत कर के।

تَبِعَ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٤٧﴾ قَالَ إِنَّمَا

जमीन में फ़साद न चाह बेशक **अल्लाह** फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता बोला यह¹⁹⁸

أُوتِيَتْهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عُنْدِي ۖ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ

तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है¹⁹⁹ और क्या इसे यह नहीं मा'लूम कि **अल्लाह** ने इस से पहले वोह

مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَآكَثَرُ جَمْعًا ۗ وَلَا يُسْأَلُ عَنْ

संगतें (कौम) हलाक फ़रमा दीं जिन की कुवतें इस से सख़्त थीं और जम्अ इस से ज़ियादा²⁰⁰ और मुजरिमों से

ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٨﴾ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ

उन के गुनाहों की पूछ नहीं²⁰¹ तो अपनी कौम पर निकला अपनी आराइश में²⁰² बोले वोह जो

يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَلْبِتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونَ ۗ إِنَّهُ لَدُونَ

दुनिया की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा कारून को मिला बेशक उस का

حِطٌّ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ

बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया²⁰³ ख़राबी हो तुम्हारी **अल्लाह** का सवाब बेहतर है उस के लिये जो

أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُلْقَاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٥٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبَدَارِهِ

ईमान लाए और अच्छे काम करे²⁰⁴ और येह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं²⁰⁵ तो हम ने उसे²⁰⁶ और उस के घर को

الْأَرْضَ ۖ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَا كَانَ

जमीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअत न थी कि **अल्लाह** से बचाने में उस की मदद करती²⁰⁷ और न वोह

198 : या'नी कारून ने कहा कि येह माल 199 : इस इल्म से मुगद इल्मे तौरैत है या इल्मे कीमिया जो उस ने हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से हासिल किया था और उस के ज़रीए से रांग को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था। या इल्मे तिजारत या इल्मे ज़िराअत या और पेशों का इल्म। सहल ने फ़रमाया : जिस ने खुदबीनी की, फ़लाह न पाई। 200 : या'नी कुवत व माल में इस से ज़ियादा थे और बड़ी जमाअतें रखते थे उन्हें **अल्लाह** तआला ने हलाक कर दिया। फिर येह वयुं कुवत व माल की कसरत पर गुरुर करता है। वोह जानता है कि ऐसे लोगों का अन्जाम हलाक है। 201 : उन से दरयाफ़त करने की हाजत नहीं वयुं कि **अल्लाह** तआला उन का हाल जानने वाला है, लिहाज़ा इस्ति'लाम के लिये सुवाल न होगा, तौबीख व जज़्र (डांट डपट) के लिये होगा। 202 : बहुत से सुवार जिलौ में (हमराह) लिये हुए जेवरों से आरास्ता, हरीरी (रेशमी) लिबास पहने आरास्ता घोड़ों पर सुवार। 203 : या'नी बनी इसराईल के उलमा। 204 : उस दौलत से जो दुनिया में कारून को मिली। 205 : या'नी अमले सालेह साबिरीन ही का हिस्सा हैं और इस का सवाब वोही पाते हैं। 206 : या'नी कारून को 207 : कारून और उस के घर के धंसाने का वाक़िआ उलमाए सियर व अख़बार ने येह ज़िक्र किया है कि हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बनी इसराईल को दरिया के पार ले जाने के बा'द मज़ह्ब की रियासत हज़रते हारून **عَلَيْهِ السَّلَام** को तफ़वीज़ की। बनी इसराईल अपनी कुरबानियां हज़रते हारून **عَلَيْهِ السَّلَام** के पास लाते और वोह मज़ह्ब में रखते, आग आस्मान से उतर कर उन को खा लेती। कारून को हज़रते हारून के इस मन्सब पर रशक हुवा, उस ने हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से कहा कि रिसालत तो आप की हुई और कुरबानी की सरदारी हज़रते हारून की, मैं कुछ भी न रहा बा वुजूदे कि मैं तौरैत का बेहतरीन कारी हूं, मैं इस पर सब्र नहीं कर सकता। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया कि येह मन्सब हज़रते हारून को मैं ने नहीं

مِنَ الْمُتَصَرِّينَ ﴿٨١﴾ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَسْتَوِي مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ

बदला ले सका²⁰⁸ और कल जिस ने उस के मर्तबे की आरजू की थी सुबह²⁰⁹ कहने लगे

وَيَكَانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَن

अजब बात है **اللَّهُ** रिज़क वसीअ करता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है²¹⁰ अगर

مِّنَ اللَّهِ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيَكَانَ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُونَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ

اللَّهُ हम पर एहसान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता ऐ अजब काफ़ि़रों का भला नहीं यह आख़िरत

दिया **اللَّهُ** ने दिया है। क़ारून ने कहा खुदा की क़सम मैं आप की तस्दीक न करूंगा जब तक आप इस का सुबूत मुझे दिखा न दें। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने रुअसाए बनी इसराईल को ज़म्अ कर के फ़रमाया : अपनी लाठियां ले आओ। उन्हें सब को अपने कुब्बे में ज़म्अ किया, रात भर बनी इसराईल उन लाठियों का पहरा देते रहे, सुबह को हज़रते हारून **عَلَيْهِ السَّلَام** का असा सर सब्जो शदाब हो गया, उस में पत्ते निकल आए। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया ऐ क़ारून तू ने ये देखा ? क़ारून ने कहा ये आप के जादू से कुछ अजीब नहीं। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** उस की मुदारात करते थे और वोह आप को हर वक़्त ईज़ा देता था और उस की सरकशी और तकब्बुर और हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के साथ अदावत दम बदम तरक्की पर थी। उस ने एक मकान बनाया जिस का दरवाज़ा सोने का था और उस की दीवारों पर सोने के तख़्ते नस्ब किये। बनी इसराईल सुबहो शाम उस के पास आते खाने खाते बातें बनाते उसे हंसाते। जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा तो क़ारून मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के पास आया तो उस ने आप से तै किया कि दिरहम व दीनार व मवेशी वगैरा में से हज़ारवां हिस्सा ज़कात देगा, लेकिन घर जा कर हिसाब किया तो उस के माल में से इतना भी बहुत कसीर होता था, उस के नफ़स ने इतनी भी हिम्मत न की और उस ने बनी इसराईल को ज़म्अ कर के कहा कि तुम ने मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की हर बात में इताअत की अब वोह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं क्या कहते हो ? उन्होंने ने कहा आप हमारे बड़े हैं जो आप चाहें हुक्म दीजिये। कहने लगा कि फुलानी बद चलन औरत के पास जाओ और उस से एक मुआवजा मुक़रर करो कि वोह हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** पर तोहमत लगाए, ऐसा हुवा तो बनी इसराईल हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को छोड़ देंगे। चुनान्चे क़ारून ने उस औरत को हज़ार अशरफ़ी और हज़ार रुपिया और बहुत से मवाईद कर के येह तोहमत लगाने पर तै किया और दूसरे रोज़ बनी इसराईल को ज़म्अ कर के हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के पास आया और कहने लगा कि बनी इसराईल आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि आप उन्हें वा'ज़ो नसीहत फ़रमाएं। हज़रत तशरीफ़ लाए और बनी इसराईल में खड़े हो कर आप ने फ़रमाया कि ऐ बनी इसराईल जो चोरी करेगा उस के हाथ काटे जाएंगे, जो बोहतान लगाएगा उस के अस्सी कोड़े लगाए जाएंगे और जो ज़िना करेगा उस के अगर बीबी नहीं है तो सो कोड़े मारे जाएंगे और अगर बीबी है तो उस को संगसार किया जाएगा यहां तक कि मर जाए। क़ारून कहने लगा कि येह हुक्म सब के लिये है ख़्वाह आप ही हों ? फ़रमाया : ख़्वाह मैं ही क्यूं न होउं। कहने लगा कि बनी इसराईल का ख़याल है कि आप ने फुलां बदकार औरत के साथ बदकारी की है। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया : उसे बुलाओ। वोह आई तो हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया उस की क़सम जिस ने बनी इसराईल के लिये दरिया फ़ाड़ा और उस में रस्ते बनाए और तौरैत नाज़िल की ! सच कह दे। वोह औरत डर गई और **اللَّهُ** के रसूल पर बोहतान लगा कर उन्हें ईज़ा देने की जुरअत उसे न हुई और उस ने अपने दिल में कहा कि इस से तौबा करना बेहतर है और हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से अर्ज़ किया कि जो कुछ क़ारून कहलाना चाहता है **اللَّهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम येह झूट है और इस ने आप पर तोहमत लगाने के इवज़ में मेरे लिये बहुत माले कसीर मुक़रर किया है। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** अपने रब के हुज़ूर रोते हुए सच्चे में गिरे और येह अर्ज़ करने लगे, या रब अगर मैं तेरा रसूल हूँ तो मेरी वज्ह से क़ारून पर ग़ज़ब फ़रमा। **اللَّهُ** तअ़ाला ने आप को वह्य फ़रमाई कि मैं ने ज़मीन को आप की फ़रमां बरदारी करने का हुक्म दिया है आप इस को जो चाहें हुक्म दें। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बनी इसराईल से फ़रमाया : ऐ बनी इसराईल **اللَّهُ** तअ़ाला ने मुझे क़ारून की तरफ़ भेजा है जैसा फ़िरऔन की तरफ़ भेजा था, जो क़ारून का साथी हो उस के साथ उस की जगह ठहरा रहे जो मेरा साथी हो जुदा हो जाए। सब लोग क़ारून से जुदा हो गए, सिवाए दो शख़्सों के कोई उस के साथ न रहा। फिर हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ज़मीन को हुक्म दिया कि इन्हें पकड़ ले तो वोह घुटनों तक धंस गए, फिर आप ने येही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए, आप येही फ़रमाते रहे हत्ता कि वोह लोग गरदनो तक धंस गए। अब वोह बहुत मिन्नत, लजाजत करते थे और क़ारून आप को **اللَّهُ** की क़समों और रिश्ता व क़राबत के वासिते देता था, मगर आप ने इल्तिफ़त न फ़रमाया, यहां तक कि वोह बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई। क़तादा ने कहा कि वोह कियामत तक धंसते ही चले जाएंगे। बनी इसराईल ने कहा कि हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ाइन व अम्वाल की वज्ह से उस के लिये बद दुआ की। येह सुन कर आप ने **اللَّهُ** तअ़ाला से दुआ की तो उस का मकान और उस के ख़ज़ाने व अम्वाल सब ज़मीन में धंस गए। 208 : हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से। 209 : अपनी उस आरजू पर नादिम हो कर 210 : जिस के लिये चाहे।

الْآخِرَةَ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فُسَادًا ۗ وَ

का घर²¹¹ हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकबुर नहीं चाहते और न फ़साद और

الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ

आक़िबत परहेज़ गारों ही की है²¹² जो नेकी लाए उस के लिये उस से बेहतर है²¹³ और जो

بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

बदी लाए तो बद काम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأْدُكَ إِلَى مَعَادٍ ۗ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ

बेशक जिस ने तुम पर कुरआन फ़र्ज़ किया²¹⁴ वोह तुम्हें फेर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो²¹⁵ तुम फ़रमाओ मेरा रब ख़ूब जानता है

مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنَّ

उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है²¹⁶ और तुम उम्मीद न रखते थे कि

يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ۗ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا

किताब तुम पर भेजी जाएगी²¹⁷ हां तुम्हारे रब ने रहमत फ़रमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की

لِلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْوَادِعَ

पुश्ती (मदद) न करना²¹⁸ और हरगिज़ वोह तुम्हें **alwadih** की आयतों से न रोके बा'द इस के कि वोह तुम्हारी तरफ़ उतारी गई²¹⁹ और अपने रब

إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۗ لَا

की तरफ़ बुलाओ²²⁰ और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना²²¹ और **alwadih** के साथ दूसरे खुदा को न पूज उस के

211 : या'नी जन्नत 212 : महमूद । 213 : दस गुना सवाब । 214 : या'नी उस की तिलावत व तब्तीग़ और उस के अहकाम पर अमल लाज़िम किया 215 : या'नी मक्कए मुकर्रमा में । मुराद येह है कि **alwadih** तआला आप को फ़त्हे मक्का के दिन मक्कए मुकर्रमा में बड़े शानो शकोह और इज़्ज़तो वक़ार और ग़लबा व इक़्तिदार के साथ दाख़िल करेगा, वहां के रहने वाले सब आप के ज़ेरे फ़रमान होंगे, शिर्क और उस के हामी ज़लीलो रुस्वा होंगे । शाने नुज़ूल : येह आयते करीमा जुहफ़ा में नाज़िल हुई । जब रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मदीने की तरफ़ हिजरत करते हुए वहां पहुंचे और आप को अपनी और अपने आबा की जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा का शौक़ हुवा तो जिब्रीले अमीन आए और उन्हों ने अर्ज़ किया कि क्या हुजूर को अपने शहर मक्कए मुकर्रमा का शौक़ है, फ़रमाया : हां उन्हों ने अर्ज़ किया कि **alwadih** तआला फ़रमाता है और येह आयते करीमा पढ़ी । **مَعَادٍ** की तफ़्सीर मौत व क़ियामत व जन्नत से भी की गई है । 216 : या'नी मेरा रब जानता है कि मैं हिदायत लाया और मेरे लिये इस का अज़्रो सवाब है और मुशिरकीन गुमराही में हैं और सख़्त अज़ाब के मुस्तहक़ । शाने नुज़ूल : येह आयत कुफ़फ़ारे मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने सथियदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की निस्वत कहा था "أَنْتَ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ" या'नी आप ज़रूर खुली गुमराही में हैं । (**مَعَادٍ**) 217 : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَىٰ عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि येह ख़िताब जाहिर में नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को है और मुराद इस से मोमिनीन हैं । 218 : उन के मुईनो मददगार न होना । 219 : या'नी कुफ़फ़ार की गुमराह कुन बातों की तरफ़ इल्तिफ़ात न करना और उन्हें ठुकरा देना । 220 : ख़ल्क को **alwadih** तआला की तौहीद और उस की इबादत की दा'वत दो । 221 : उन की इआनत व मुवाफ़क़त न करना ।

إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۗ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

सिवा कोई खुदा नहीं हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ फिर जाओगे²²²

﴿ آیاتھا ٦٩ ﴾ ﴿ سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ ١٥ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ٤ ﴾

सूरए अन्कबूत मक्किय्या है, इस में उन्हत्तर आयतें और सात रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللّٰهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

الَّذِينَ أَحْسَبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾

क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज्माइश न होगी²

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَ

और बेशक हम ने उन से अगलों को जांचा³ तो ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और

لَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ

ज़रूर झूटों को देखेगा⁴ या यह समझे हुए हैं वोह जो बुरे काम करते हैं⁵ कि

يَسْبِقُونَا ۗ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾ مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ

हम से कहीं निकल जाएंगे⁶ क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो⁷ तो बेशक अल्लाह की

222 : आखिरत में और वोही आ'माल की जज़ा देगा । 1 : सूरए अन्कबूत मक्किय्या है, इस में सात रूकूअ, उन्हत्तर आयतें, नव सो अस्सी कलिमे, चार हज़ार एक सो पेंसठ हर्फ़ हैं । 2 : शदाइद, तकालीफ़ और अन्वाअ मसाइब और ज़ौके ताआत व तर्के शहवात व बज़्ले जान व माल से उन की हकीकते ईमान खूब ज़ाहिर हो जाए और मोमिने मुख़्लिस और मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ ज़ाहिर हो जाए । शाने नुज़ूल : येह आयत उन हज़रत के हक़ में नाज़िल हुई जो मक्कए मुकर्रमा में थे और उन्हों ने इस्लाम का इक़्ार किया तो अस्थाबे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें लिखा कि महज़ इक़्ार काफ़ी नहीं जब तक कि हिज़रत न करो । उन साहिबों ने हिज़रत की और ब क़स्दे मदीना रवाना हुए । मुशिरकीन उन के दरपै हुए और उन से किताल किया । बा'ज हज़रत उन में से शहीद हो गए बा'ज बच आए । उन के हक़ में येह दो आयतें नाज़िल हुई । और हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुराद उन लोगों से सलमा बिन हिशाम और अयाश बिन अबी रबीआ और वलीद बिन वलीद और अम्मार बिन यासिर वगैरा हैं जो मक्कए मुकर्रमा में ईमान लाए । और एक कौल येह है कि येह आयत हज़रते अम्मार के हक़ में नाज़िल हुई जो खुदा परस्ती की वज्ह से सताए जाते थे और कुफ़र उन्हें सख़्त ईजाएँ पहुंचाते थे । और एक कौल येह है कि येह आयतें हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के गुलाम हज़रते मिहजअ बिन अब्दुल्लाह के हक़ में नाज़िल हुई जो बद्र में सब से पहले शहीद होने वाले हैं । सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इन की निस्बत फ़रमाया कि मिहजअ सय्यिदुशुहदा हैं और इस उम्मत में बाबे जन्त की तरफ़ पहले वोह पुकारे जाएंगे । इन के वालिदैन और इन की बीबी को इन का बहुत सदमा हुवा तो अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल की फिर उन की तसल्ली फ़रमाई । 3 : तरह तरह की आज्माइशों में डाला, बा'ज उन में से वोह हैं जो आरे से चीर डाले गए, बा'ज लोहे की कंधियों से पुर्जे पुर्जे किये गए और मक़ामे सिदको वफ़ा में साबित व काइम रहे । 4 : हर एक का हाल ज़ाहिर फ़रमा देगा । 5 : शिर्क व मआसी में मुब्तला हैं 6 : और हम उन से इन्तिक़ाम न लेंगे । 7 : बअूस व हिसाब से डरे या सवाब की उम्मीद रखे ।